Raga of the Month March, 2021

रागांग खमाज

उत्तर भारतीय संगीत पद्धतिमें खमाज थाट एवं खमाज राग महत्वपूर्ण माना जाता है। खमाज नाम प्राचीन है, और कर्नाटक संगीत पद्धतिके हरिकांभोजी (मेलकर्ता नंबर २८) का रूपांतर खमाज थाटमें हुआ है। केवल निषाद कोमल और बाकी सभी स्वर शुद्ध ऐसा इस थाटका स्वरूप है। लेकिन प्रचलित खमाज रागमें शुद्ध निषादका प्रयोग आरोहमें और कोमल निषादका प्रयोग अवरोहमें किया जाता है, मगर कोमल निषादका प्रयोग कभीकभी अवरोहमें किया जाता है (जैसे ग म प ध नि रें सां) । खमाज रागमें ख्यालकी अपेक्षा ठुमरी, दादरा, टप्पा, गझल तथा भजन आदी प्रकार सुननेको मिलते हैं।

खमाज थाट के रागोंके 2 वर्ग माने जाते हैं। **पहले वर्गके रागोंमें गांधार प्रबल** होता है, उन्हें हम **खमाज अंगके राग** कहते हैं। गांधार प्रबल वर्गमें निम्नलिखित राग आते हैं-
खमाज, झिंझोटी, खंबावती, गारा, तिलंग, (खमाज थाटका) दुर्गा, रागेश्री, गौडमल्हार, कलावती।

अब हम **राग खमाज** का स्वरूप और राग वाचक विशेष स्वर संगतियोंका अभ्यास करेंगे।
उपयोजित स्वर - सब शुद्ध स्वर और कोमल निषाद, आरोहमें ऋषभ वर्जित, जाति षाडव- संपूर्ण;
वादी गांधार, संवादी निषाद, पूर्वांग प्रधान, गान समय- रात का प्रथम प्रहर;
आरोह- सा ग म प, ध नि सा; **अवरोह**- सां नि ध प, म ग, रे सा ; **स्वर प्रयोग के विशेष**- रे का उच्चारण दीर्घ नहीं, तथा आरोहमें धैवतका महत्व कम रहता है ।

विशेष स्वरसंगति- **नि़ सा ग**, सा ग,म ग,प, मपधमग, म ग रे सा; नि़ सा ग म प, **ग म नि ध नि प ध नि सां,** प नि सां गं रें सां , रें नि सां नि ध प , म प ध म ग ,**प म ग, म ग रे सा**; **पकड़**- **ग म नि ध प, म प ध म ग**

अब खमाज थाट से ही निकलनेवाले **दूसरे वर्ग** का विचार करेंगे। इस वर्गके रागोंमें **ऋषभ प्रबल** होता है; वे **सोरठ अंग के राग** माने जाते हैं- इस वर्गमें सोरठ, देस (देश), तिलककामोद, देस अंग का सावन, नारायणी, जयजयवंती, गोरख कल्याण, खोकर राग आते हैं।

राग सोरठ- इस रागमें दोनों निषाद और सब स्वर शुद्ध हैं। गांधार आरोहमें वर्जित है और अवरोहमें मध्यम और ऋषभ के मींड प्रयोगमें अप्रत्यक्ष रूप से लगता है। ऋषभ पंचम वादी संवादी स्वर है।
आरोह सा रे, म प, नि सां ; **अवरोह**- सां नि ध प, म->रे सा; **मुख्य स्वर समूह**- म प ध म-> रे, नि़ सा

राग देस को राग सोरठ का सम प्राकृतिक राग माना जाता है। इसमें राग सोरठ जैसे ही दोनों निषाद और अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं; मगर गंधारका अवरोहमें स्पष्ट रूप से प्रयोग होता है। इस रागमें ध म ,रे नि़ और ग नि़ संगति का विशेष प्रयोग होता है।
मुख्य स्वर समूह- ध म ग रे, म प नि सां , रें नि ध प
सोरठ राग का गायन वादन प्रचार कम होने के कारण राग देश को ही अब सोरठ के स्थान पर रागांग राग माना जाता है।

आजके ऑडिओमें हम पं. के जी गिंडे द्वारा लेक्चर डेमो में प्रस्तुत राग खमाजकी विशेषताएँ, उस्ताद वाजिद अली शाह (अख्तर पियाँ) निर्मित एक सादरा , आचार्य रातंजनकरजीने बनायी हुई राग सोरठमें बंदिश सुनेंगे और अन्तमें सुश्री कौशिकी चक्रवर्तीजीने गाया हुआ राग देस सुनेंगे।

{ आभार प्रदर्शन - क्रमिक पुस्तक मालिका और संगीत शास्त्र; अभिनव गीतांजली -पं रामाश्रेय झा, पं . यशवंत महाले, श्री अजय गिंडे }

०१-०३ -२०२१